UGC Serial No.: 40965 Impact Factor 2.131 ISSN : 2249-6742

Shodh Pravah

An Multidisciplinary Quarterly Referred International Research Journal

Vol. 8.3 No. 4 (April-June, 2019)

Chief-Editor
Dr. Shivdeepak Sharma

Sub-Editor
Dr. Keshav Kishor Kashyap

Published by
Deptt. of Sanskrit, L.S. College,
B.R.A. Bihar University, Muzzafarpur (Bihar), INDIA

CONTENT

- Education of Children With Disability in Uttar Pradesh 245-249
  Alendra Tripathi
  Dr. Rajnish Yadav
- Internet Dependency and Use of ICT Among Students: A Study of Higher Education Institutions in Uttar Pradesh 250-253
  Bhavna Dubey
  Dr. Praveen Tripathi
- उत्तर प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति 254-257
  निहारिका श्रीवास्तव
  डॉ0 प्रवीण त्रिपाठी
- **ग्रामीण रूपांतरण एवं समग्र विकास उपागम : एक समाजशास्त्रीय विवेचन** 258-261
  विवेकानन्द सिंह
- **आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जी की आलोचना दृष्टि : एक विवेचन** 262-263
  प्रदीप कुमार
- **नालन्दा विश्वविद्यालय भारत की समृद्ध शैक्षिक विरासत** 264-266
  सुनीता मिश्रा
  डॉ. अनुभा शुक्ला
- **नरेश मेहता कृत 'दो एकान्त' उपन्यास का कथानक एवं पात्र परिप्रेक्ष्य** 267-270
  सत्येन्द्र कुमार
  डॉ0 सुधा सिंह
- **दलित साहित्य में मार्क्सवाद, गाँधीवाद और आम्बेडकरवाद पर हिन्दी की दलित स्त्री रचनाकारों का दृष्टिकोण** 271-274
  अमी सेन
- **Cyber Security Integrated Real Time Application with Digital Forensics** 275-279
  1Parimalkumar Patel, 2 Dr. Binod Agarwal,3 Dr. Dharmesh kumar Bhavsar
- **उच्च शिक्षा स्तर के प्राध्यापकों तथा बी0एड्0 के प्रशिक्षणार्थियों के वैदिक कालीन नारी शिक्षा व्यवस्था के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन** 280-284
  अशोक कुमार सिंह कुशवाहा
  डॉ0 नरेन्द्र कुमार सिंह
- **भावी अध्यापकों को जनसंख्या वृद्धि के प्रयासों को समझाना** 285-288
  दीपक सिंह
  डॉ0 विभा सिंह
- **चंपारण सत्याग्रह एवं राजकुमार शुक्ल** 289-290
  सतीश कुमार
- **समावेशी विकास और सूक्ष्म व लघु उद्योगः फिरोजाबाद कांच उद्योग के परिप्रेक्ष्य में** 291-293
  नवनीत सारस्वत
- **शैक्षिक उपलब्धि में अध्ययन आदत की महत्ता** 294-297
  आशाराम वर्मा
  डॉ0 अनुभा शुक्ला
- **भारत में उच्च शिक्षा : समस्याएं एवं समाधान** 298-300
  संजय हिरवे

UGC Serial No. : 40965 ISSN : 2249-6742

भारत में उच्च शिक्षा : समस्याएं एवं समाधान

संजय हिरवे*

सारांश

शिक्षा मानव संसाधन के विकास की एक मूल आवश्यकता है, यह देश के आर्थिक एवं सामाजिक तंत्र के मध्य संतुलन बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत के विकास के संबंध में शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा नें भारत को एक नवीन आधार प्रदान किया है, जिस पर चलकर भारत के विद्यार्थी तरक्की के नित नवीन द्वार खोल रहे हैं। उच्च शिक्षा नें हमारी अर्थव्यवस्था को गति देने के साथ–साथ भारतीय साहित्य एवं संस्कृति को भी एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है। वह उच्च शिक्षा हि है जिसके वशीभूत होकर आज भारतीय समाज एक ऐसे मोड़ तक आ पहुंचा है, जहां हम विश्व के समकक्ष कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने की कोशिश में लगे हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था अमेरिका और चीन के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी व्यवस्था है, जो अपने अनेकों संस्थानों के माध्यम से संपूर्ण भारत में शिक्षा के कार्य को प्रसारित करती है। उच्च शिक्षा विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के सहयोग से भारतीय जनमानस को गुणवत्तापूर्ण तथा सहज माहौल प्रदान कर रही है। इसमें सुधार की दृष्टि से आए दिन हो रहे नवीन शोध कार्यों एवं नियमों से इसे सरल, सहज एवं सर्व सुलभ बनाया जा रहा है, जिससे भारत का युवा वर्ग उच्च शिक्षण संस्थानों की ओर आकर्षित रहे।

इस शोध पत्र के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली विभिन्न समस्याओं को दर्शाते हुए उनके निदान हेतु सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को प्रदर्शित किया गया है, साथ ही उच्च शिक्षा के विकास हेतु स्वयं के विचारों को भी प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। हमारे समाज में होने वाले परिवर्तन एवं समाज के विकास में शिक्षा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से ही शिक्षा ने मानव सभ्यता व संस्कृति को बनाए रखते हुए उच्च शिक्षा की ओर अपने कदम अग्रसर किए हैं। वास्तव में उच्च शिक्षा का इतिहास भारत में ऐतिहासिक काल से रहा है, चाहे वह प्राचीन कालीन तक्षशिला विश्वविद्यालय एवं नालंदा विश्वविद्यालय हो या फिर मध्यकालीन मदरसे एवं मकतब हो या आधुनिक भारत के विश्वविद्यालय हो, सभी ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को उन्नत बनाने में अपना सर्वस्व दिया है।

वर्तमान समय में भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय शिक्षा व्यवस्था अनवरत नवीनता की ओर प्रयासरत है। अगर आज के संदर्भ में उच्च शिक्षा का साधारण शब्दों में वर्णन किया जाए तो इसका अर्थ है कि विभिन्न लोगों के लिए विभिन्न विभिन्न चीजें। उच्च शिक्षा का अर्थ है कि किसी शिक्षण संस्थान जैसे महाविद्यालय या किसी विश्वविद्यालय से उच्च शैक्षणिक योग्यता को प्राप्त करना। साथ ही उच्च शिक्षा विद्यार्थी का ज्ञान ही नहीं बढ़ाती वरन यह विद्यार्थियों के निर्णय लेने की क्षमता का विकास कर उन्हें अपने आसपास की परिस्थितियों का सामना करना भी सिखाती है। उच्च शिक्षा औद्योगिक क्षेत्र में उन्नति के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करती है और वैश्विक स्तर पर अनेकों रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है।

भारत में उच्च शिक्षा :–

मानव सभ्यता के उदय के साथ ही भारत शिक्षा तथा दर्शन जैसे क्षेत्रों में विश्व का अग्रणी रहा है। प्राचीन कालीन विश्व गुरु की पहचान रखने वाला भारत मध्यकाल में मदरसे एवं मकतबों के रूप में परिवर्तित हो गया। शिक्षा के विकास क्रम आधुनिक काल में ईसाई मिशनरियों के धर्म प्रचारकों के द्वारा प्रारंभ हुआ और आगे चलकर ब्रिटिश हुकूमत ने अनेकों अधिनियम के माध्यम से भारतीय शिक्षा को विश्वविद्यालय शिक्षा के रूप में परिवर्तित करना प्रारंभ किया। इसी क्रम में सबसे महत्वपूर्ण प्रयास लॉर्ड कर्जन के शिमला समझौते से हुआ इसके प्रावधानों के अनुसार वर्ष 1902 में विश्वविद्यालय आयोग नियुक्त हुआ जो वर्ष 1904 में जाकर भारतीय विश्वविद्यालय कानून बना।

आजादी के बाद भारतीय उच्च शिक्षा को महात्मा गांधी के आदर्शों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया गया। महात्मा गांधी का विचार था कि शिक्षा मनुष्य के मन, शरीर तथा आत्मा का सर्वांगीण विकास करती है। इसी सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने हेतु विश्वविद्यालय आयोग ने वर्ष 1956 से कार्य करना प्रारंभ किया जो अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से भारत की संपूर्ण उच्च शिक्षा व्यवस्था को नियंत्रित करता हैं।

प्रशासनिक आधार पर विश्वविद्यालय :–

भारत में प्रशासनिक स्तर के आधार पर विश्वविद्यालय भिन्न भिन्न होते हैं –

* शोध छात्र, समाज विज्ञान अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

जैसे – केंद्रीय विश्वविद्यालय, राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय एवं निजी विश्वविद्यालय।

केंद्रीय विश्वविद्यालय :– यह वे विश्वविद्यालय हैं, जो केंद्र सरकार के माध्यम से संचालित होते हैं। वर्तमान में इनके प्रबंधन की जिम्मेदारी मानव विकास मंत्रालय, जहाजरानी मंत्रालय, कृषि मंत्रालय तथा विदेश मंत्रालय के अंतर्गत आती है। वर्ष 1887 में स्थापित इलाहाबाद विश्वविद्यालय भारत का प्रथम केंद्रीय विश्वविद्यालय है।

राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय :– राज्य स्तर पर संचालित होने वाले विश्वविद्यालय हैं, जिनका प्रबंधन राज्य सरकारों के द्वारा किया जाता है।

निजी विश्वविद्यालय :– शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एवं उच्च शिक्षा को उन्नत बनाने के उद्देश्य से प्रशासन द्वारा निजी विश्वविद्यालयों को अनुमति प्रदान की जाती है।

डीम्ड विश्वविद्यालय :– डीम्ड विश्वविद्यालय अर्थात मानद विश्वविद्यालय। वह विश्वविद्यालय जो उच्च मानदंडों के साथ किसी क्षेत्र विशेष पर काम करते हैं, जिन्हें यू.जी.सी. की सलाह पर केंद्र सरकार डीम्ड–टू–बी–यूनिवर्सिटी घोषित कर सकती है।

उपर्युक्त सभी विश्वविद्यालय भारत को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकास हेतु सहायता प्रदान करते हैं।

उच्च शिक्षा हेतु समस्याएं :–

- उच्च शिक्षा रिपोर्ट 2019 के अनुसार वर्ष 2018 तक भारत में सकल नामांकन अनुपात केवल 26.3% था, जो विश्व के अन्य देशों की तुलना में काफी कम है अतः भारतीय युवा आबादी को उच्च शिक्षा से जोड़ना एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में देखा जा रहा है।
- गुणवत्ता की समस्या भी एक प्रमुख समस्या बनकर उभरी है। वास्तव में विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों की तुलना में भारतीय शिक्षा प्रणाली उच्च गुणवत्ता को धारण नहीं करती। अतः शिक्षा की गुणवत्ता में सकारात्मक सुधार भी एक महत्वपूर्ण चुनौती रही है।
- भारत में बढ़ती शिक्षित बेरोजगारी ने भी उच्च शिक्षा की ओर से युवा वर्ग का रुझान कम किया है। अतः इस युवा वर्ग को शिक्षित बेरोजगारी से मुक्ति दिलाना तथा रोजगार के सुअवसर उपलब्ध कराना भी एक चुनौती रहेगी।
- अधिकांश उच्च शिक्षण संस्थान अपने यहां स्थाई प्राध्यापकों की कमी के चलते अपने उद्देश्यों से पीछे हटते नजर आ रहे हैं। अतः नियमित प्राध्यापकों की नियुक्ति न कर पाना भी उच्च शिक्षा के लिए एक चुनौती बन गया है।
- उच्च शिक्षा में बेहतरी हेतु एवं गुणवत्ता में सुधार हेतु प्राध्यापकों के लिए उचित प्रशिक्षण का अभाव भी एक चुनौतीपूर्ण रूप में सामने आया है।
- भारत के अधिकांश उच्च शिक्षण संस्थान आर्थिक सहायता में कमी के कारण अपनी क्षमताओं के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं। अतः ऐसे संस्थानों को खोजना एवं उन तक आर्थिक मदद पहुंचाना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।
- वर्तमान में नवाचार आधारित शिक्षा की कमी को दूर करना तथा नवीन शोध कार्यों को बढ़ावा देते हुए रोजगारोन्मुख शिक्षा व्यवस्था का संचालन करना आवश्यक हो गया है, जो एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने है।
- नवीन भारत के विचारों को ध्यान में रखते हुए हमारी शिक्षा नीति में बदलाव की अनेकों संभावनाएं द्वार पर खड़ी । इस चुनौती हेतु नवीन शिक्षा नीति को लागू करने के उद्देश्य से सरकार के द्वारा भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। वास्तव में शिक्षा नीति 1986 (संशोधन 1992) के प्रावधानों में बदलाव कर नई शिक्षा नीति लागू करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम :–

- किताबों की कमी के चलते शिक्षा प्राप्त ना करने के अभाव को पूर्ण करते हुए सरकार ने अब इ–बुक तथा इ–लाइब्रेरी जैसी व्यवस्थाओं को तैयार किया है, साथ ही विभिन्न शोध ग्रंथों को भी डिजिटल रूप देखकर उपलब्ध कराया है।
- उच्च शिक्षा के प्रति छात्रों के रुझान को बढ़ाने एवं उन्हें वित्तीय सहायता देने हेतु अनेकों छात्रवृत्ति योजनाएं प्रारंभ की गई है, जिनके माध्यम से योग्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हासिल हो सके।
- योग्य विद्यार्थियों के उच्च शिक्षण संस्थानों में पक्षपात रहित चयन हेतु कॉमन एंट्रेंस एग्जाम का आयोजन भी किया जाने लगा है।
- वर्ष 2018 में फर्जी विश्वविद्यालयों पर रोक लगाने के उद्देश्य से 'हायर एजुकेशन कमिशन ऑफ इंडिया' की स्थापना का फैसला लिया गया, ताकि विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ ना हो सके।
- बढ़ती बेरोजगारी को दूर करने हेतु शिक्षण व्यवस्था के साथ–साथ कौशल विकास को भी बढ़ावा दिया गया तथा इस हेतु अनेकों कौशल विकास केंद्र खोले गए। इसी उद्देश्य को ध्यान रखते हुए नई शिक्षा नीति को भी तैयार किया जा रहा हैं। भारतीय कौशल विकास संस्थान, राष्ट्रीय कौशल विकास संस्थान, राष्ट्रीय पशु संवर्धन योजना, स्किल इंडिया कार्यक्रम आदि के माध्यम से कौशल का विकास किया जा रहा हैं।
- उन्नत भारत अभियान के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि स्थानीय निकायों एवं ग्रामीण समुदायों से प्रत्यक्ष होकर ग्राम पंचायतों की विकास योजनाओं से संबंधित जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे।
- उड़ान योजना के माध्यम से छात्राओं को पढ़ाई एवं आगे की तैयारी हेतु योग्य अवसर प्रदान किया जाने लगा है।

सुझाव :–

- विश्वविद्यालयों को प्राप्त होने वाले अनुदानों को विश्वविद्यालयों के प्रदर्शन के आधार पर दिया जाना उचित होगा, मगर इसका यह तात्पर्य नहीं कि कमजोर प्रदर्शन करने वाले विश्वविद्यालय के अनुदान को काटा जाए। ऐसे विश्वविद्यालयों को वित्तीय सहायता से पुनः सुदृढ़ अवस्था में लाने का प्रयास करना होगा।
- वर्तमान दौर की प्रासंगिकता को मद्देनजर रखते हुए नवीन शिक्षा नीति का संचालन आवश्यक हो गया है, जो शिक्षण क्षेत्र में बुनियादी एवं ढांचागत व्यवस्था को और मजबूती प्रदान कर सके।
- शिक्षण संस्थानों को औद्योगिक शिक्षा पर ध्यान देते हुए अपने यहां इस हेतु उचित माहौल तैयार करना चाहिए जिससे विद्यार्थी प्रायोगिक कार्य कर सकेंगे तथा अपने कौशल की पहचान भी कर सकेंगे।
- पाठ्यक्रमों में बदलाव के माध्यम से रोजगार परक शिक्षा के लिए एक योजनाबद्ध तरीके से सुधार किया जाना आवश्यक है जिससे शिक्षित बेरोजगारी को दूर करने में भी सफलता हासिल होगी। नई शिक्षा नीति इस दिशा में मजबूती के साथ प्रयासरत होगी ।
- विकसित देशों की तर्ज पर देश की विकास योजनाओं में शिक्षण संस्थानों को भी महत्व देना होगा, जिससे नवीन विचारों का आदान–प्रदान होगा और शोध कार्यों को भी बढ़ावा मिलेगा।
- उच्च शिक्षा व्यवस्था को और मजबूती प्रदान करने हेतु स्कूली शिक्षा में बुनियादी परिवर्तन आवश्यक हैं। अतः नई शिक्षा नीति द्वारा इस दिशा में मजबूती से कार्य किया जा रहा है।
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीनता के लिए प्राध्यापकों के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था एक योजनाबद्ध तरीके से होनी चाहिए एवं इसका संचालन कार्य वैश्विक स्तर पर होना चाहिए, जिससे विचारों के आदान–प्रदान के माध्यम से शिक्षा एक नया मुकाम हासिल कर सकेगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैश्विक शिक्षा के इस दौर में भारतीय उच्च शिक्षा के सामने अनेकों चुनौतियां मौजूद है, जिन पर सरकार सुधार हेतु प्रयासरत है। इस सुधार के क्रम में सरकार उच्च शिक्षा के महत्व को समझते हुए उसके विकास हेतु आने वाली अनुदान की कमी, शोध कार्यों को बढ़ावा देना, नवीन नीतियों का पालन करना जैसे महत्वपूर्ण कार्यों का प्रमुखता से निपटारा कर रही है। इस शोध पत्र के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली कुछ प्रमुख समस्याओं का वर्णन किया गया है तथा उनके निदान हेतु कुछ उपायों को भी प्रस्तुत किया गया है जो उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के सुधार के लिए सहायक साबित होंगे।

संदर्भ :–

1. भटनागर सुरेश–2017 'भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास', आर लाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. झा एंड श्रीमाली–2009 'प्राचीन भारत का इतिहास', हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. कुमार नरेश–2001 'राष्ट्रीय शिक्षा', विक्रम प्रकाशन, दिल्ली।
4. लाल एंड पेलोड–2007 'भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास और उसकी समस्याएं', बी लाल एजुकेशनल पब्लिशर्स, दिल्ली।
5. मिश्र अमरेश–2012 'आधुनिक शिक्षा का स्वरूप', मिश्रा बुक डिपो, इलाहाबाद।
6. पचौरी महावीर–2011 'भारत में आधुनिक शिक्षा', रजत प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. पांडेय रामसकल–2011 'शिक्षा : वर्तमान संदर्भ में', विकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. शारदा जितेंद्र–2008 'शिक्षा की समस्याएं', श्री गणेश प्रकाशन, दिल्ली।
9. शर्मा पी डी–2016 'भारत में शिक्षा स्तर, समस्याएं एवं मुद्दे', श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
10. वेदालंकार सत्यकाम–2002 'शिक्षा, सिद्धांत और समस्याएं', राष्ट्रवाणी पब्लिकेशन, दिल्ली।
11. वैश्य एल.पी.–2005 'उच्च शिक्षा : दशा एवं दिशा', विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
12. वर्मा हरिश्चंद्र–2009 'मध्यकालीन भारत', हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।